शोध पत्र/Research Paper

सहस्त्राब्दी पीढ़ी का निखार

Honing the Millennials

दलीप रैना[1], विधि कौल[2] एवं मीनाक्षी कौल[3]
Dalip Raina[1], Viddhi Koul[2] and Meenakshi Koul[3]
[1, 3]Shri Vishwakarma Skill University, Palwal, Haryana
[2]University of Delhi, New Delhi
[1]dalip.raina@svsu.ac.in, [2]viddhikoul@gmail.com, [3]meenakshikoul@svsu.ac.in
https://doi.org/10.5281/zenodo.18555628

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में, श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय, उच्च शिक्षा विभाग, हरियाणा एवं कन्सेन्ट्रिक्स कंपनी के संयुक्त तत्वावधान में प्रायोजित "सहस्त्राब्दी पीढ़ी का निखार (Honing the Millennials)" कार्यक्रम का विश्लेषण किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा सभी क्षेत्रों में शैक्षणिक योग्यता एवं उद्योग की अपेक्षाओं के बीच के अंतर को समाप्त करने के लिए नितांत आवश्यकताओं को चिन्हित किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य संचार संवाद में अपेक्षित कौशल, जीवन कौशल, व्यक्तित्व विकास, साक्षात्कार सम्बन्धी गुण, प्रस्तुतिकरण कला, वैयक्तिक ब्रांडिंग और अंकीय अधिगम को प्रोत्साहित करना था। कार्यक्रम में जनसांख्यिकीय आधार पर हरियाणा के सभी जिलों के स्नातक और स्नातकोत्तर युवाओं को पांच दिवसीय व्यापक प्रशिक्षण दिया गया था। व्याकरण, लेखन और वाक कला के साथ-साथ गैर तकनीकी कौशलों और अंकीय उपकरणों से वृहद प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रारूप सम्मिलित थे। कार्यक्रम में प्रतिदिन 30 उम्मीदवारों को विश्वविद्यालय के प्रमाणित मुख्य प्रशिक्षक द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

Abstract

In the present research paper, the program "Honing the Millennials" sponsored jointly by Shri Vishwakarma Skill University, Higher Education Department, Haryana and Concentrix Company has been analyzed. The University identified urgent needs to bridge the gap between academic qualifications and industry requirements across all areas. The main objective of the programme was to promote required skills in communication, life skills, personality development, interview skills, presentation arts, personal branding and digital learning. The programme was to provide five days of comprehensive training to graduate and post graduate youth from all districts of Haryana on demographic basis. The format of the comprehensive training programme included grammar, writing and speech skills along with non-technical skills and digital tools.In the program, 30 candidates every day were trained by the certified master trainer of University.

मुख्य शब्द: सहस्त्राब्दी पीढ़ी, कौशल विश्वविद्यालय, संचार कौशल, जीवन कौशल।
Key Words: Millennials, Skill university, Communication skills, Life skills.

परिचय

ऐसा माना जाता है कि सहस्त्राब्दी पीढ़ी डिजिटलयुग में पूरी तरह से डूब कर बडी होने वाली पीढी है, जो इंटरनेट के उद्भव से लेकर स्मार्टफोन और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के प्रसार तक प्रौद्योगिकी की तेजी से हो रही प्रगति को देख रही है।[8] इन कारणों ने उनके संचार विधियों और यहां तक कि रोजगार और शिक्षा के बारे में उनके दृष्टिकोण को प्रभावित किया है। इसके अलावा, सहस्त्राब्दी पीढ़ी को विशेष आर्थिक बाधाओं का सामना करना पड़ा है, उदाहरण के लिए 2000 के दशक के उत्तरार्ध की भीषण मंदी का दौर, जिसने रोजगार, वित्तीय स्थिरता और रोजगार की उन्नति के प्रति उनके दृष्टिकोण को बदल दिया। यह पीढ़ी भौतिक वस्तुओं पर अनुभवों को प्राथमिकता देने और अपने काम में अर्थ और पूर्ति खोजने के लिए विख्यात है। रोजगार की आवश्यकताओं को पूरा करने और वर्तमान नौकरियों में उत्कृष्टता प्राप्त करने या यहां तक कि बेहतर अवसरों की तलाश करने के लिए, कर्मचारियों को तकनीकी कौशल के साथ-साथ भाषा और संचार कौशल सहित नम्र-कौशल पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।

उद्योग चर्चाओं से संकेत मिलता है कि श्रमिकों में गुणवत्ता की चुनौतियों में तकनीकी ज्ञान और व्यवहार शामिल है। संभावित श्रमिकों में तकनीकी कौशल के साथ-साथ नम्र-कौशल की कमी है और जिला कुशल श्रम उद्योग मानकों से कम है।[1]उद्योग का दावा है कि कई क्षेत्रों में उम्मीदवारों के पास बुनियादी व्यापार-ज्ञान और मशीन संचालन कौशल की कमी है। उद्योग-प्रासंगिक पाठ्यक्रमों की अनुपस्थिति और उम्मीदवारों में सीमित बहु-कौशल चिंता का विषय है। इन्ही कारणों से उद्योग, तकनीकी और गैर-तकनीकी भूमिकाओं हेतु व्यक्तियों को तैयार करने के लिए आन्तरिक प्रशिक्षण में काफी मात्रा में निवेश करते हैं।बड़ी और मध्यम आकार की कंपनियां आधुनिक मशीनरी के लिए नए आवेदकों को नियुक्तिकरने से बचते है। उच्च मुआवजे की उम्मीदें और अपर्याप्त नौकरी प्रशिक्षण उद्योग को ऐसी भूमिकाओं के लिए नए स्नातक, जो आधुनिक मशीनरी संचालित कर सकते हैं, को काम पर रखने में बाधा डालते हैं।

वर्ष 2014 के दौरान, उद्योग और शिक्षा के बीच अंतर को समझते हुए, उद्यमिता और कौशल विकास का समर्थन करने के लिए कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय की स्थापना की गई थी।उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय को अन्य सभी मंत्रालयों की कौशल विकास परियोजनाओं और राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC) के लिए नीतियां बनाने का काम सौंपा गया। लक्ष्यों में कौशल मानचित्रण, प्रमाणन, बाजार अनुसंधान, पाठ्यक्रम डिजाइन, उद्यमिता शिक्षा, और मांग और आपूर्ति अंतराल को दूर करने के लिए नम्र और संगणक कौशल को बढ़ावा देना शामिल है।

हरियाणा सरकार ने कौशल और उद्यमिता विकास की दिशा में भारत सरकार की प्रतिबद्धता को समझते हुए वर्ष 2016 में भारत का पहला कौशल विश्वविद्यालय स्थापित किया। विश्वविद्यालय ने वर्ष 2017-18 में कौशल-अंतर विश्लेषण किया। अध्ययन का उद्देश्य रोजगार के माहौल के बारे में सहस्त्राब्दी पीढ़ी की धारणा विश्लेषण करना था। विश्लेषण से स्पष्ट था कि भारत के युवा अच्छी शिक्षा योग्यता के साथ शिक्षित हैं, फिर भी उनमें से अधिकांश बेरोजगार हैं जिसका प्रमुख कारण नम्र एवं संचार कौशल की कमी का होना है।

सहस्त्राब्दी पीढ़ी में नम्र कौशल प्रशिक्षण की आवश्यकता

कॉलेज की डिग्री और प्रशिक्षुता ने स्नातकों को ज्ञान और नई प्रतिभाओं से परिपूर्ण किया है, लेकिन रोजगार में नम्र कौशल की कमी पाई गयी है। हालिया वर्षों में सहस्त्राब्दी पीढ़ी की रोजगार के प्रति दृष्टिकोण की आलोचना की गई है। उनका मानना है कि रोजगार में नम्र कौशल की तुलना में तकनीकी कौशल अधिक महत्वपूर्ण हैं।[6] कॉर्पोरेट लीडर्स के अनुसार व्यावसायिकता, सकारात्मक दृष्टिकोण एवं ईमानदारी सबसे महत्वपूर्ण कार्य क्षमताएं हैं।[7]नम्र कौशल के लिए आव्यूह की परिभाषा, आवेदन, मूल्यांकन, शोधन और संशोधन को दर्शाया गया। स्नातकों में महत्वपूर्ण सोच, समस्या समाधान, नेतृत्व और जिम्मेदारी, संचार और सामूहिक कार्य जैसी क्षमता का वर्णन किया गया। ये क्षमताएं पेशेवर और शैक्षिक संदर्भों में अधिक से अधिक महत्वपूर्ण होती जा रही हैं।[9]

नम्र कौशल को मजबूत बनाना

कार्यस्थल में आगे बढ़ने के लिए समय के साथ नम्र कौशल का विकास आवश्यक है। यद्यपि तकनीक-

प्रेमी, सहस्त्राब्दी पीढ़ी, ऑन-द-जॉब और आमने-सामने प्रशिक्षण के माध्यम से नम्र कौशल सीखते हैं। नयी सहस्त्राब्दी पीढी के लिए ऐसे कार्यक्रम विकसित किये जाने चाहिए जोकिआवश्यक नम्र कौशल प्रदान करते हो। आज की प्रतिस्पर्धी वैश्विक कार्य दुनिया में, कर्मचारियों के लिए प्रतिस्पर्धा करने के लिए तकनीकी कौशल अपर्याप्त हैं। कई लेख, सेमिनार और प्रशिक्षण नौकरी की सफलता के लिए नम्र कौशल पर जोर देते हैं। आज, अधिकांश रोजगार में तकनीकी क्षमताएं सबसे महत्वपूर्ण कारक नहीं हैं। इसके बजाय, नम्र कौशल द्वारा दूसरों के साथ प्रभावी ढंग से काम करने के लिए आवश्यक व्यक्तिगत लक्षणों पर जोर दिया जाता है।

सहस्त्राब्दी पीढ़ी के लिए नम्र कौशल प्रशिक्षण और उनके संचार, टीम वर्क, सेवाओं और नेतृत्व में सुधार करना समय की आवश्यकता है।[10] तकनीकी रूप से जागरूक सहस्त्राब्दी पीढ़ी और युवा पेशेवरों को कभी-कभी ग्राहकों के साथ उत्पादक रूप से काम करने, टीमों के साथ सहयोग करने और कार्यस्थल में खुद को स्थापित करने के लिए आवश्यक बुनियादी संचार कौशल की कमी होती है। अच्छे नम्र कौशल रिश्तों की आधारशिला हैं और उत्कृष्ट सेवा, टीम वर्क और संगठनात्मक प्रदर्शन की जीवनदायिनी हैं।

शोध-पद्धति

श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय ने युवा आकांक्षा सर्वेक्षण के आधार पर शिक्षार्थियों के दो अलग-अलग समूहों के साथ एक पायलट कार्यक्रम आयोजित किया। हरियाणा सक्षम युवा योजना के 30 छात्रों के एक समूह, विशेष रूप से पलवल और फरीदाबाद जिलों से, ने संचार और नम्र कौशल पर केंद्रित छह महीने के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। छात्रों को कक्षा में तीन महीने की प्रशिक्षण अवधि से गुजरना पड़ा, इसके बाद विभिन्न सरकारी कार्यालयों और उद्योग भागीदारों के साथ काम करने के लिए एक और तीन महीने का समय दिया गया। कुछ छात्र वर्तमान में अपने जिले में सरकारी विभागों में कार्यरत हैं, जबकि एक छात्र ने कनाडा में नौकरी प्राप्त की है।

फरीदाबाद, गुरुग्राम और पलवल जिलों में स्थित कई सरकारी कॉलेजों के छात्रों का एक अलग समूह है। कुल 1240 छात्रों ने समान रूप से प्रशिक्षण लिया, संचार और नम्र कौशल के विकास पर ध्यान केंद्रित किया। फरीदाबाद के सरकारी कॉलेज ने प्रस्ताव पत्र प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि का अनुभव किया। कार्यक्रम के पूरा होने के बाद, लगभग 20% छात्रों ने रोजगार हासिल किया। मूल्यांकन और प्रमाणन विभाग, एसवीएसयू ने एससीईआरटी के साथ मिलकर स्कूली छात्रों के लिए इसी तरह का कार्यक्रम शुरू किया है ताकि छात्रों को भविष्य के रोजगार के लिए तैयार किया जा सके।

कार्यस्थल पर नम्र कौशल और संचार कौशल का महत्व

व्यवसाय और जीवन में रिज्यूमे, साक्षात्कार और पारस्परिक सफलता के लिए नम्र कौशल आवश्यक हैं। कई कंपनियां नम्र कौशल को अपनी 'आवश्यक' या 'वांछित' जॉब लिस्टिंग में सूचीबद्ध करती हैं। एक मानव संसाधन सहयोगी नौकरी विज्ञापन 'सावधानीपूर्वकता' पर जोर दे सकता है, जबकि एक विपणन विशेषज्ञ नौकरी विज्ञापन 'नेतृत्व' और 'संचार कौशल' पर जोर दे सकता है। नम्र-प्रतिभाएँ कई क्षेत्रों में लागू होती हैं। नौकरी सूचीबद्धता पर विचार करें तो विशेष रूप से नम्र-प्रतिभाओं या विशेषताओं को वरीयता दी जाती है। कम आकर्षक नौकरी के शीर्षक के बावजूद, नौकरी का विवरण प्रतिभा और रुचियों से मेल खा सकता है। जैसे-जैसे नौकरी की तलाश आगे बढ़ती है, नम्र-प्रतिभा के साथ रिज्यूमे को अपडेट करना नौकरी के अवसरों के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक होता है। उम्मीदवारों को एक साक्षात्कार के दौरान पारस्परिक कौशल का चित्रण करने पर आंका जाता है।

मजबूत संचार कौशल करियर और रोजगार साक्षात्कार में मदद करते हैं। प्रभावी संचार यह जानने पर जोर देता है कि विभिन्न परिस्थितियों में लोगों के साथ कैसे जुड़ना है।[12] किसी समूह के साथ किसी परियोजना पर काम करते समय किसी अक्षम विचार या प्रक्रिया से असहमत होना पड़ सकता है। नियोक्ता संघर्ष को भड़काने के बजायठीक और प्रभावी ढंग से राय देने की क्षमता को महत्व देते हैं। अच्छी तरह से संवाद करने के लिए प्रभावी अभिव्यक्ति महत्वपूर्ण है, सक्रिय सुनना भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि संगठनात्मक स्तर पर भी संघर्ष को हल करने के लिए आवश्यक है। संगठनात्मक स्तर पर मुद्दों को हल करने के लिए, त्वरित और दीर्घकालिक समाधान के लिए उद्योग विशेषज्ञ शामिल हो सकते हैं।

मुद्दों से निपटने के दौरान मल्टीटास्किंग : एक संगठन में कर्मचारियों से बहु-कार्य की अपेक्षा की जाती है, जोकिएक कर्मचारी की रचनात्मकता को भी बढ़ाता है। अभिनव कर्मचारी उच्च जोखिम लेने वाले होते हैं और पहल करने में विश्वास करते हैं। रचनात्मकता बहुआयामी है और इसके लिए न केवल तकनीकी कौशल की आवश्यकता होती है बल्कि नम्र कौशल भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। अभिनव लोग न केवल कार्यों को करने के लिए अभिनव तरीके बना सकते हैं बल्कि प्रक्रियाओं को बढ़ाने और सुधारने और कंपनी के लिए रोमांचक नई संभावनाएं बनाने में भी मदद कर सकते हैं। नौकरी पिरामिड के किसी भी स्तर पर सभी नौकरियों के लिए रचनात्मकता की आवश्यकता होती है। रचनात्मक क्षमताएं जिज्ञासा को बढ़ाती हैं, दूसरों से ज्ञान प्राप्त करना, विभिन्न दृष्टिकोणों पर विचार करना और निष्पक्ष निर्णय लेने की इच्छा प्रदर्शित करना सिखाती हैं।

एक और महत्वपूर्ण सवाल यह है कि क्या कर्मचारी परिवर्तन के अनुकूल होने में सक्षम हैं? एक प्रौद्योगिकी कंपनी या स्टार्ट-अप में रोजगार के लिए नई परिस्थितियों और चुनौतियों को प्रभावी ढंग से समायोजित करने और प्रतिक्रिया देने की क्षमता की आवश्यकता होती है। कम्पनियां ऐसे व्यक्तियों की अत्यधिक सराहना करती हैं जिनमें प्रतिकूल परिस्थितियों और तरीकों के अनुकूल ढलने की क्षमता होती है।

हाल के अध्ययनों के अनुसार, नम्र कौशल का अध्ययन प्रौद्योगिकी के बाहर किया जाता है और प्रबंधन, आईटी, शिक्षा, प्रशासन, आतिथ्य, चिकित्सा और फार्मेसी में महत्वपूर्ण हैं। नम्र कौशल सफलता के लिए महत्वपूर्ण हैं, भले ही कोई आईटी या विनिर्माण उद्योग में कार्यरत हो, या पारिवारिक व्यवसाय या बहुराष्ट्रीय निगम में कार्यरत हो। प्रत्येक दिन, कार्यस्थल विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों के साथ बैठकें, प्रशिक्षण और व्यावसायिक लेनदेन प्रदान करते हैं जो विचारों और सूचनाओं को लागू करने के लिए मिलकर काम करते हैं। भारत जैसे-जैसे वैश्विक अर्थव्यवस्था में अधिक एकीकृत होता जाएगा, ऐसे पेशेवरों की मांग बढ़ेगी जो विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोगों के साथ प्रभावी ढंग से बातचीत और सहयोग कर सकें। वैश्विक कार्यस्थलों को नेविगेट करने और अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों और ग्राहकों के साथ सफल संबंध विकसित करने के लिए सांस्कृतिक क्षमता, अनुकूलनशीलता और सहयोग जैसे नम्र कौशल आवश्यक हैं।

हालांकि सहस्त्राब्दी पीढ़ी को अक्सर डिजिटल नेटिव के रूप में संदर्भित किया जाता है, फिर भी सफल संचार के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने में प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इसमें ईमेल शिष्टाचार, आभासी सहयोग उपकरण और ऑनलाइन प्रस्तुति कौशल को समझना शामिल है। इन कौशलों में सुधार उत्पादकता को बढ़ावा दे सकता है और तेजी से डिजिटल कार्यस्थल में सुचारू संचार को सक्षम कर सकता है। जॉब एडवांसमेंट के लिए नम्र कौशल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नौकरी की नियुक्ति, व्यवसायों के भीतर उन्नति और नेतृत्व की स्थिति में सफलता के लिए प्रभावी संचार, नेतृत्व, समस्या-समाधान और बातचीत की क्षमता की आवश्यकता होती है। इन क्षेत्रों में प्रशिक्षण भारत में सहस्त्राब्दी पीढ़ी को प्रतिस्पर्धी कार्य बाजार में खुद को अलग करने और अपने करियर को आगे बढ़ाने में मदद कर सकता है।

आतिथ्य, पर्यटन, खुदरा और ग्राहक सेवा और ग्राहक संबंधों के लिए, असाधारण सेवा प्रदान करने और ग्राहकों और उपभोक्ताओं के साथ संबंध स्थापित करने के लिए अच्छे संचार कौशल की आवश्यकता होती है। नम्र कौशल प्रशिक्षण सहस्त्राब्दी पीढ़ी को ग्राहक पूछताछ को संभालने, मुद्दों को हल करने और ग्राहक आनंद को आश्वस्त करने के लिए आवश्यक पारस्परिक कौशल प्रदान कर सकता है, जिसके परिणामस्वरूप कॉर्पोरेट सफलता मिलती है। भारत में उद्यमशीलता और व्यावसायिक गतिविधियों में वृद्धि देखी गई है, जिसमें सहस्त्राब्दी पीढ़ी व्यवसायों की स्थापना और रचनात्मक वाणिज्यिक प्रयासों की खोज में अग्रणी हैं। नम्र कौशल प्रशिक्षण महत्वाकांक्षी उद्यमियों को उनकी दृष्टि को व्यक्त करने, बाधाओं पर बातचीत करने और उनके व्यवसायों की सफलता को चलाने में मदद कर सकता है।

नम्र कौशल प्रशिक्षण लोगों को क्रॉस-सांस्कृतिक संचार कौशल, सहानुभूति और संवेदनशीलता विकसित करके इन जटिलताओं को पार करने में सहायता कर सकता है। सांस्कृतिक मतभेदों को समझना और संचार तकनीकों को अपनाना,अंतर्राष्ट्रीय व्यापार स्थितियों में विश्वास, सम्मान और सहयोग पैदा कर सकता है, जिससे

भारत को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने में मदद मिल सकती है। आज की परस्पर दुनिया में, कई संगठन अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए टीम वर्क और सहयोग पर भरोसा करते हैं। भारत में सहस्त्राब्दी पीढ़ी को अपनी टीमों के भीतर और विभागों या भौगोलिक सीमाओं के पार सहकर्मियों के साथ प्रभावी ढंग से बातचीत करने के लिए अच्छे पारस्परिक और संचार कौशल की आवश्यकता होती है। नम्र कौशल प्रशिक्षण, सक्रिय सुनने, रचनात्मक प्रतिक्रिया, संघर्ष समाधान और आम सहमति निर्माण को प्रोत्साहित कर सकता है, जिसके परिणामस्वरूप एक सकारात्मक टीम गतिशील और सामूहिक सफलता प्राप्त कर सकती है।

प्रौद्योगिकी नवाचार और बाजार में उथल-पुथल की त्वरित गति को देखते हुए, भारत की सहस्त्राब्दी पीढ़ी को आजीवन सीखने और लचीलेपन को अपनाना चाहिए। महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मकता और समस्या-समाधान जैसे नम्र कौशल, अनिश्चितता को नेविगेट करने, नए अवसरों को हथियाने और तेजी से बदलते बाजार में प्रासंगिक होने के लिए महत्वपूर्ण हैं। संचार प्रशिक्षण सहस्त्राब्दी पीढ़ी को अपने विचारों को स्पष्ट करने, प्रश्न पूछने, प्रतिक्रिया प्राप्त करने और निरंतर आत्म-सुधार में संलग्न होने में मदद कर सकता है, निरंतर सीखने और लचीलेपन के लिए कार्यस्थल में नवाचार और लचीलापन के वातावरण को बढ़ावा दे सकता है। नेटवर्किंग नौकरी की प्रगति, उद्यमिता और व्यक्तिगत विकास के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है। भारत में सहस्त्राब्दी पीढी पेशेवर संबंधों को स्थापित करने और बनाए रखने, अपने नेटवर्क को व्यापक बनाने और नई संभावनाओं को जब्त करने के लिए नम्र कौशल प्रशिक्षण का उपयोग कर सकते हैं। प्रभावी नेटवर्किंग में न केवल बातचीत शुरू करना शामिल है, बल्कि सक्रिय रूप से सुनना, व्यावसायिकता का प्रदर्शन करना और विश्वास स्थापित करना भी शामिल है। नम्र कौशल प्रशिक्षण सहस्त्राब्दी पीढ़ी को प्रभावी ढंग से नेटवर्क के लिए आवश्यक आत्मविश्वास और सामाजिक कौशल प्रदान कर सकता है। जैसे-जैसे रिमोट वर्क और वर्चुअल सहयोग लोकप्रियता में बढ़ा है, भारतीय सहस्त्राब्दी पीढ़ी के लिए प्रभावी संचार और नम्र कौशल तेजी से महत्वपूर्ण हो गए हैं। दूरस्थ रोजगार के लिए मजबूत आत्म-अनुशासन, समय प्रबंधन कौशल और डिजिटल वातावरण में स्पष्ट और प्रभावी ढंग से संवाद करने की क्षमता की आवश्यकता होती है। सहस्त्राब्दी पीढ़ी नम्र कौशल प्रशिक्षण से लाभ उठा सकते हैं ताकि उन्हें संचार बाधाओं को दूर करने, आभासी टीमों में विश्वास पैदा करने और दूरस्थ रूप से काम करते हुए उत्पादकता और मनोबल बनाए रखने में मदद मिल सके। कार्यस्थल विविधता और समावेश आज के विविध कार्यस्थलों की तरह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समावेशिता को बढ़ावा देना और विविधता को अपनाना कॉर्पोरेट सफलता के लिए महत्वपूर्ण है। भारत में सहस्त्राब्दी पीढ़ी नम्र कौशल प्रशिक्षण से लाभ उठा सकते हैं जो सहानुभूति, सांस्कृतिक क्षमता और सहयोगी भावना पर केंद्रित है। समावेशिता को बढ़ावा देने और विविधता का सम्मान करने से, सहस्त्राब्दी पीढ़ी एक अधिक आमंत्रित और न्यायसंगत कार्यस्थल वातावरण बनाने में मदद कर सकते हैं जिसमें हर कोई सफल होने के लिए मूल्यवान, सम्मानित और सशक्त महसूस करता है।

आज के प्रतिस्पर्धी कार्य बाजार में, भारत में सहस्त्राब्दी पीढ़ी को अपनी अनूठी क्षमताओं और शक्तियों को उजागर करने और उजागर करने के लिए व्यक्तिगत ब्रांडिंग का उपयोग करना चाहिए। नम्र कौशल प्रशिक्षण नेटवर्किंग और ऑनलाइन उपस्थिति प्रबंधन के माध्यम से एक सम्मोहक व्यक्तिगत ब्रांड विकसित करने में सहस्त्राब्दी पीढ़ी की सहायता कर सकता है। अपने संचार कौशल में सुधार और एक सकारात्मक पेशेवर प्रतिष्ठा विकसित करके, सहस्त्राब्दी पीढ़ी अवसरों को आकर्षित कर सकती है, विश्वसनीयता हासिल कर सकतीहै और अपने वांछित क्षेत्रों में अपने करियर में सुधार कर सकती है।

नम्र कौशल प्रशिक्षण भारत में सहस्त्राब्दी पीढ़ी को आत्म-प्रतिबिंब, दूसरों के लिए सहानुभूति और प्रभावी संघर्ष समाधान को प्रोत्साहित करके भावनात्मक बुद्धिमत्ता में सुधार करने में सहायता कर सकता है। अपनी भावनाओं को समझना और नियंत्रित करना, साथ ही पारस्परिक गतिशीलता को कुशलतापूर्वक नेविगेट करना, सहस्त्राब्दी पीढ़ी को गहरे संबंध विकसित करने, बेहतर निर्णय लेने और अधिक प्रभाव के साथ नेतृत्व करने की अनुमति देता है।

संक्षेप में, भारत में सहस्त्राब्दी पीढ़ी को नम्र कौशल और संचार प्रशिक्षण में निवेश करने से, वे निश्चित रूप से आज के गतिशील और जुड़े हुए पेशेवर क्षेत्रों में

सफल होंगे। सहस्त्राब्दी पीढ़ी अपनी रोजगार क्षमता में सुधार करके, व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास को प्रोत्साहित करके और निरंतर सीखने और विकास के अवसरों का लाभ उठाकर उन संगठनों और समुदायों में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्ययन में दावा किया गया है कि भारत के बदलते पेशेवर परिवेश में सहस्त्राब्दी पीढ़ी की सफलता नम्र कौशल और संचार प्रशिक्षण में निवेश पर निर्भर है। अध्ययन कैरियर की प्रगति, ग्राहक सेवा, उद्यमिता, अंतर-सांस्कृतिक व्यापार वार्ता और दूरस्थ कार्य सहित विभिन्न रोजगार डोमेन में संचार, अनुकूलनशीलता, टीमवर्क और भावनात्मक बुद्धिमत्ता जैसे नम्र कौशल के महत्व को रेखांकित करता है। इसके अलावा, यह पेशेवर सम्बन्ध स्थापित करने, कार्यस्थल में विविधता और समावेशिता को बढ़ावा देने, व्यक्तिगत प्रतिष्ठा बढ़ाने और किसी के करियर को आगे बढ़ाने में पारस्परिक कौशल के महत्व पर प्रकाश डालता है। यह अध्ययन सुझाव देता है कि संचार और नम्र कौशल प्रशिक्षण का कार्यान्वयन स्कूल और कॉलेज से ही जमीनी स्तर पर शुरू किया जाना चाहिए। कर्मचारियों को समय-समय पर कौशल उन्नयन का प्रशिक्षण भी दिया जाना चाहिए ताकि उनके कौशल को वैश्विक स्तर पर कर्मचारियों के साथ तालमेल बिठाने के लिए ठीक से निखारा जा सके।

सन्दर्भ

1. https://nsdcindia.org/sites/default/files/files/haryana-sg-report.pdf
2. https://assets.kpmg.com/content/dam/kpmg/pdf/2014/09/FICCI-KPMG-Global-Skills-Report-low.pdf
3. Https://trainingindustry.com/blog/performance-management/millennials-need-soft-skills-training/
4. https://www.forbes.com/sites/kate-hayes/2017/09/05/the-soft-skills-that-matter-most-in-the-workplace/?sh=3d18607a6c2e
5. https://www.drrickbrinkman.com/keynotes-training-soft-skills-for-millennials.
6. Clement A. and Murugavel T.,English for Employability: A Case Study of the English Language Training Needs Analysis for Engineering Students in India, English Language Teaching, 8(2), (2015)
7. Myers and Kendra, "How the Internet is Used by the Millennial Generation and Its Impact on Family Interaction" (2016). Masters Theses. https://thekeep.eiu.edu/theses/2503.
8. India Skill Report 2023. https://do3n1uzkew47z.cloudfront.net/siteassets/pdf/ISR_Report_2023.pdf
9. VladanDevedzic, BozanTomic, JalemaJovanovic and Mathew Kelly, Metrics for students' soft skills, Applied Measurement in Education, 31(4): 283-296, (2018).
10. Dean A. and Julia I., Soft skills needed for the 21st century workforce, International Journal of Applied Management and Technology, 18(1): 17-32, (2019).
11. Danao M., 11 Essential soft skills in 2024. https://www.forbes.com/advisor/business/soft-skills-examples.
12. Venter E., Bridging the communication gap between Generation Y and the Baby Boomer generation, International Journal of Adolescence and Youth, 22(4): 1-11, (2017).

❐